बी.ए. हिन्दी (प्र०) / अध्ययन सामग्री / खण्ड-प्रथम
डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक :- 09.04.2021

पत्र : द्वितीय / प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

कबीर की भक्ति-भावना

कबीर रामानंद की शिष्य परंपरा से आते हैं। राम-नाम का बीजमंत्र इन्होंने वहीं से ग्रहण किया। लेकिन इनके राम दशरथ पुत्र राम न होकर, निर्गुण ब्रह्म हैं। वे कहते हैं –

"दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना॥"

स्पष्ट है, ~~वे कहते हैं~~ कबीर के राम दशरथ पुत्र राम नहीं हैं वे तो तो इसका खंडन करते हैं। उनके समय तक राम लोक के मिथकीय चेतना के अंग बन चुके थे। इसलिए उन्होंने राम नाम को उसी लोक ~~के~~ के बीच से उठाते हुए निर्गुण स्वरूप प्रदान किया।

" निर्गुण राम जपहुँ रे भाई, अविगत की गति लखि न जाई।"
कबीर की दृष्टि में राम-नाम ही जीवन का सार तत्व है। इस सार तत्व को वर्ण, जाति, धर्म, संप्रदाय और लिंग से परे हटकर कबीर हर किसी को समझाना चाहते हैं।

कबीर मूलत: एक भक्त हैं, कवि बाद में। लेकिन उनके भक्ति के ~~[illegible]~~ प्रदर्शन के क्रम में उनके कवित्व गुण से भी साक्षात्कार होता है।

कबीर निर्गुण ब्रह्म को मानते हैं। उनके अनुसार ईश्वर निराकार गुणों से परे एवं कण-कण में विद्यमान है। कबीर ऐसा मानते हैं कि माया की शक्ति के कारण ही जीव ईश्वर के स्वरूप को नहीं पहचान पाता है। इसलिए वे माया को 'महाठगिनी' कहते हैं, जिसके कारण मनुष्य ~~[illegible]~~ सांसारिकता के भुलावे में उलझा रहता है।

कबीर का रहस्यवाद एक ओर हिन्दु अद्वैतवादी दर्शन से प्रेरित और प्रभावित है तो दूसरी तरफ मुस्लिम सूफी सिद्धांतों का भी उनपर प्रभाव है। अद्वैतवाद से प्रभावित होने के कारण वे आत्मा और परमात्मा को एक ही सत्ता मानते हैं। दूसरी तरफ वे नाथपंथियों के 'हठयोग' से भी प्रभावित हैं। वे अपने साधना में एकाग्र होकर, परमात्मा के दिव्य स्वरूप का मनन करते हैं और ~~[illegible]~~ समाधिस्थ हो आत्मा को ईश्वर में मिला लेते हैं।

इनके भक्ति का मार्ग का रास्ता गुरु के माध्यम से खुलता है। वे गुरु की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं—

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाँव।
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविन्द दियो बताए॥"

अर्थात् में गोविन्द की तुलना में गुरु को अधिक महत्व प्रदान करते हैं, क्योंकि गुरु ही ईश्वर के प्राप्ति का मार्ग बतलाता है।

कबीर ने राम-नाम की महिमा (भक्ति) का वर्णन करते हुए कहा है—

"भगति भजन हरि नाँव है, दूजा दुक्ख अपार।
मनसा वाचा कर्मना, कबीर सुमिरन सार॥

राम (भक्ति) से विमुख जीवन को वे व्यर्थ मानते हैं। ~~साथ ही संपूर्ण प्रेम भक्ति ही है।~~ साथ ही कबीर का संपूर्ण प्रेम भक्ति ही है जो प्रभु के वियोग में उन्हें पाने के लिए व्याकुल रहता है। प्रभु के मिल जाने पर उन्हें पूर्णता की प्राप्ति हो जाती है। अर्थात् इनका भक्ति ही प्रेम है और प्रेम ही भक्ति है।